*बिना मेहनत की और साझा नहीं की गई समृद्धि टिकती नहीं**

वी.के. शर्मा

जैसा कि किसी भी बड़े संकट में अवश्य होता है, हाल ही में हुए वैश्विक वित्तीय और आर्थिक संकट, जिसमें यूरो जोन संकट भी शामिल है, ने वित्त, पूंजीवाद और वैश्वीकरण की नई संरचना के बारे में गरमा-गरम बहस की शुरुआत कर दी है। हालांकि समस्या समय के साथ उत्पन्न हुए वित्त, पूंजीवाद और वैश्वीकरण की संरचना से उतनी अधिक संबंधित नहीं थी जितनी कि वस्तुतः देखी गई। भारी वैश्विक वित्तीय और आर्थिक संकट की चेतावनी वास्तविकता के बहुत करीब थी। ऐसा इसलिए नहीं हुआ कि वर्तमान ढांचा और कार्यप्रणाली विफल हुई बल्कि इसलिए हुआ क्योंकि जिन पर इनका अनुपालन करने और लागू करने की जिम्मेदारी थी, उन्होंने इन्हें असफल कर दिया ! आखिर, विनियामकों और विनियामितों के सभी जोखिमों में मानव संसाधनों का जोखिम सबसे गंभीर होता है क्योंकि यही सभी जोखिमों की जड़ होता है, जिसकी पुष्टि वर्तमान वित्तीय और आर्थिक सुनामी से भी होती है। प्रभावी और विश्वसनीय प्रणालियों का तात्पर्य उपयुक्त प्रणाली से नहीं बल्कि उपयुक्त लोगों से है, क्योंकि उपयुक्त व्यक्ति अनुपयुक्त प्रणाली भी ठीक प्रकार से चला सकता है, जबकि अनुपयुक्त व्यक्ति उपयुक्त प्रणाली को भी नहीं चला सकता। उपयुक्त व्यक्ति-अनुपयुक्त व्यक्ति के समंजन का संबंध मुख्यतः और वस्तुतः 'नैतिकता-व्यवहार्यता' के बीच समंजन से है, क्योंकि 'नैतिकता' पर 'व्यवहार्यता' की जीत के बहुत से किस्से प्रचलित हैं। मामले का सार यह है कि हमारी जरूरत अधिक या कम विनियमन नहीं बल्कि अच्छा विनियमन और अभिशासन है। यही बात विनियामकों/पर्यवेक्षकों और वित्तीय संस्थाओं/बैंकों की विफलता का कारण बनी। दुर्भाग्यवश, मंथर हो चुकी विश्व-भर की विनियामक और पर्यवेक्षण प्रणाली के व्यापक स्तर पर और एक साथ विफल होने के कारण, विशेष रूप से पश्चिमी देशों में, अप्रत्याशित वैश्विक वित्तीय संकट उत्पन्न हुआ जो अंततोगत्वा भारी मंदी में तब्दील हुआ। संकट के पहले स्पष्ट और भारी जोखिम के पूर्व-संकेतों को अभूतपूर्व ढंग से कम आंकने की विनियामकों और पर्यवेक्षकों की असफलता का पता अमरीकी फेडरल रिज़र्व के उपाध्यक्ष डोनाल्ड कॉन की बहुत विलंब से लेकिन हाल ही में की गई इस स्वीकारोक्ति से पता चलता है कि 'सिपाहियों में तालमेल नहीं था, जिसका परिणाम सबसे बुरी मंदी और असंख्य रोजगारों के नुकसान के रूप में देखा गया'। मुख्य समस्या यह नहीं थी कि इसकी जानकारी नहीं थी, बल्कि इसकी जानकारी होने, अनिश्चयता की स्थिति में रहने, विकल्पों पर अधिक विचार करने, टालमटोल करने, विलंब करने और समय पर इसके समाधान हेतु कोई ठोस और प्रामाणिक तथा निर्णायक कदम न उठाने की थी। अपनी सुविचारित राय को मैं दूसरे शब्दों में कहूं तो, हमें पूंजीवाद और वैश्वीकरण के बारे में पुनर्विचार करने की आवश्यकता नहीं है। जॉन रस्किन ने बड़ी सरलता से यही तो कहा है कि, क्या करना है यह जानना उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है जितना यह जानना कि जो किया जाना है उसे कब किया जाए !!

2. सुनामीरूपी वित्तीय संकट के कारण शॉप फ्लोर/उत्पाद/सेवाओं के मुकाबले 'आस्ति मूल्य' मुद्रास्फीति/आस्ति बबल्स को भी मौद्रिक नीति प्रतिक्रिया में महत्त्वपूर्ण चर के रूप में मान्यता प्राप्त हुई, जबकि पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था। जो भी घटित हुआ वह अभूतपूर्व था और मौद्रिक नीति का ध्यान सिर्फ परंपरागत उपभोक्ता मूल्य सूचकांक पर केंद्रित था। स्थावर संपदा/संपत्ति, ऋण आस्तियों, इक्विटी और पण्यों के मूल्यों में जबरदस्त उछाल के बावजूद ब्याज दरें कम रखी गईं। यह सब चीन और अन्य उदीयमान बाजार अर्थव्यवस्थाओं में संकट-पूर्व के चालू खाता अधिशेष के कारण संभव हुआ। आरक्षित मुद्रा वाले देशों, विशेष रूप से अमरीका में, उदीयमान बाजार अर्थव्यवस्थाओं में आई चालू खाता घाटे से अधिक की निजी पूंजी आवक की विशाल मात्रा आधिकारिक पूंजी प्रवाह के रूप में सरकारी बांडों में पुनर्चक्रित हुई। इसके चलते दीर्घावधि प्रतिफल कम हुआ और इसके कारण और अधिक जोखिम श्रेणी की दीर्घावधि ब्याज दरें गिर गईं। वैश्विक बचत की प्रचुरता के

* 'रिथिंकिंग कैपिटलिज्म ऐंड ग्लोबलाइजेशन' विषय पर विश्व बैंक संस्थान के सहयोग से 'कारोबार में नैतिकता पर वैश्विक फोरम' द्वारा यूरोपियन संसद, ब्रूसेल्स, बेल्जियम में आयोजित परिचर्चा में श्री वी.के. शर्मा, कार्यपालक निदेशक, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा 30 नवंबर 2012 को दिया गया मुख्य भाषण। इसमें दिए गए विचार लेखक के हैं, न कि भारतीय रिज़र्व बैंक के।

कारण लाभ से यथार्थरूपी ऋण बबल उत्पन्न हुआ जिसकी विशेषता जोखिम का अत्यधिक कम मूल्यन था। इसकी झलक सर्वकालीन कम प्रीमियम वाले जोखिमपूर्ण बांडों के विस्तार और निवेश श्रेणी के ऋणों से उनके भेदपूर्ण नहीं होने से मिलती है ! इतने कम ब्याज दर के माहौल ने चलनिधि की आपूर्ति की सरलता के चलते अत्यधिक लीवरेज और जोखिम लेने के लिए उपयुक्त माहौल तैयार किया। यह वित्तीय लक्षण ''बहुत अधिक'' और ''बहुत कम'' से संबंधित उत्तम उदाहरण था - बहुत अधिक तरलता, बहुत अधिक लीवरेज, बहुत अधिक जटिल वित्तीय उपाय, जोखिम की तुलना में बहुत कम प्रतिफल, जोखिमों की बहुत कम समझ। जटिल राकेट-विज्ञान तथा वित्तीय रासायनिक चमत्कार की तरह बहुत अधिक के इस लक्षण ने वित्तीय जगत में वास्तविक जरूरत के क्षेत्रों को करीब-करीब पूर्णतः उपेक्षित करते हुए खुद के लिए एक बहुत बड़ा वित्तीय क्षेत्र का सृजन करके वास्तविक क्षेत्र में असंतुलन उत्पन्न कर दिया जो मूलतः टिकाऊ नहीं होने के कारण अब अपनी स्वाभाविक परिणति को प्राप्त हुआ, जिसकी जानकारी अब सभी को है।

3. यह महत्त्वपूर्ण है कि 2007 के पहले की उक्त भारी चालू खाता असंतुलन की गाथा वर्तमान यूरोजोन संकट में करीब-करीब दोहराई जा रही है। इस संकट में यूरोजोन के प्रमुख देशों के बीच विशाल और लगातार बने हुए चालू खाते के घाटे में असंतुलन बना हुआ है। इस असंतुलन में प्रमुख योगदान जर्मनी और नीदरलैंड्स तथा संकट प्रभावित परिधि के देशों का रहा है। प्रमुख देशों का अधिशेष, परिधि के देशों के चालू खाता घाटे के लगभग समान है। यह वास्तव में ध्यान देने योग्य बात है कि प्रमुख देशों के चालू खाता अधिशेष में एकल मुद्रा प्रारंभ करने के बाद नाटकीय ढंग से वृद्धि हुई क्योंकि प्रमुख देशों की वास्तविक विनिमय दर में काफी गिरावट आई और परिधि के देशों की वास्तविक विनिमय दर में वृद्धि हुई। अगर एकल मुद्रा के स्थायी और सुदृढ़ विनिमय दर का स्पष्ट नैतिक खतरा नहीं होता तो प्रमुख देशों और परिधि के देशों के बीच इतना विशाल और लगातार बना हुआ असंतुलन संभव नहीं होता। परिधि के देशों की संबंधित राष्ट्रीय मुद्राओं का वास्तविक अवमूल्यन हो गया होता और चालू खाता घाटे का समय पर पुनर्संतुलन हो जाता! किंतु प्रसंगवश महत्त्वपूर्ण बात है कि प्रमुख देशों और परिधि के देशों के बीच चालू खाते का असंतुलन काफी हद तक 1999 के बाद यूरोजोन के राजकोषीय बिखराव से राजकोषीय संकेंद्रण के कारण हुआ, क्योंकि जब तक निवल निजी बचत इस अंतर को पूरा नहीं करती राजकोषीय घाटे के चालू खाता घाटे में परिवर्तित हो जाने की प्रवृत्ति होती है और इसलिए यूरो के प्रारंभ होने के बाद मास्ट्रिच राजकोषीय मानदंडों के वर्तमान अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए विश्वसनीय, प्रभावी और कार्यक्षम संस्थागत प्रवर्तन प्रणाली होनी चाहिए थी। यदि जापान के मामले की तरह निवल निजी बचत का संतुलन निवल सरकारी खर्च से हो जाता तो 1999 के बाद परिधि के देशों के राजकोषीय संकेंद्रण से बिखराव की इस गाथा का कोई महत्त्व नहीं होता! अतः वर्तमान संकट से बाहर आने के लिए प्रमुख देशों की तुलना में परिधि के देशों में उच्चतर उत्पादन और प्रतिस्पर्धा के माध्यम से इस असंतुलन को दूर करना होगा। चीन और अमरीका के बीच के असंतुलन को दूर करने के मामले में भी ठीक ऐसा ही हुआ था। 2007 में अमरीका का चालू खाता घाटा 6 प्रतिशत था जो वर्तमान में घटकर 3 प्रतिशत हो गया है और चीन का चालू खाता अधिशेष 2007 के 10 प्रतिशत से तेजी से घटकर वर्तमान में 2.6 प्रतिशत हो गया है! इस प्रकार 'बिना मेहनत-साझा नहीं की गई समृद्धि' के ढांचे में 'घाटे' वाले परिधि के देशों के लिए बिना मेहनत की कमाई थी और 'अधिशेष' वाले प्रमुख देशों के लिए 'साझा नहीं की गई' समृद्धि थी ! किंतु चीन और अमरीका के मामले की ही तरह खुशखबरी यह है कि जर्मनी में वास्तविक मजदूरी 3 प्रतिशत बढ़ गई है और ग्रीस में 7 प्रतिशत की गिरावट हुई है। इसके अलावा इस प्रकार के असंतुलन को दूर करने के लिए परिधि के देशों से वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात तथा प्रमुख देशों से वस्तुओं और सेवाओं के आयात का करार भी होना चाहिए।

4. जैसा कि मैंने उल्लेख किया, विशाल और लगातार बने हुए चालू खाते के असंतुलन से घाटे में चल रहे रिज़र्व मुद्रा वाले देशों में 'बिना मेहनत' की समृद्धि आई और अधिशेष वाले देशों में 'बिना साझा' की गई समृद्धि आई। इस प्रकार की वैश्विक आर्थिक व्यवस्था शुरू से ही स्वाभाविक रूप से अरक्षणीय और अस्थिर थी। परंतु इस घटना से वैश्वीकरण के लिए जो सबसे अच्छी बात हुई और जिसका उच्च नैतिक मूल्य था, वह यह थी कि बहुत अल्प अवधि को छोड़कर, इसके अंतर्गत 'बिना मेहनत' और 'बिना साझा' किए समृद्धि नहीं टिकती बल्कि 'मेहनत से

कमाई गई' और 'साझा की गई' कमाई से ही 'टिकाऊ समृद्धि' आती है ! ध्यान देने की बात है कि 'बिना मेहनत' की और 'बिना साझा' की गई समृद्धि कोई समाजवादी, समतावादी निरर्थक व्याख्यान-कला नहीं है बल्कि अपरिवर्तनीय वैश्वीकृत और लगातार एकीकृत हो रहे अन्योन्याश्रित विश्व के लिए अनिवार्य वास्तविक-राजनीतिक और भू-आर्थिक अनिवार्यता है। टिकाऊ वैश्वीकरण से तात्पर्य समष्टि आर्थिक संतुलन साम्य, संतुलन और सामंजस्य से है। इसको ब्रह्मांड के संतुलन/साम्य/सामंजस्य से जोड़कर देखा जा सकता है जहां तारे, सूर्य, ग्रह -सभी अपनी परवलयाकार कक्षाओं में निर्धारित अनुशासन में चक्कर लगाते हैं और जहां पर सूर्य और तारों से सबसे नजदीक तथा सबसे दूर स्थित चक्कर लगाने वाले ग्रहों को भी उनके पथ से विचलन की अनुमति नहीं होती है। ब्रह्मांड के सामंजस्य, संतुलन और साम्य से होने वाले किसी भी विचलन के व्यवहार/घटना से बहुत अधिक प्रतिघात ही मिलेंगे। असाम्य और असंतुलन जितना अधिक प्रभावी और जितने समय तक जारी रहेगा, उससे उत्पन्न होने वाले कष्ट उतने ही अधिक तीव्र और अति कष्टदायी होंगे। वर्तमान में विशेष रूप से यूरोजोन में ऐसी ही तकलीफ महसूस की जा रही है क्योंकि यूरोजोन के विभक्त हो जाने पर इस बात पर नजर रखने के लिए कोई व्यवस्था नहीं है कि अधिशेष वाले/ऋणदाता प्रमुख देशों को कमी वाले/ऋणी परिधि के देशों की तुलना में बहुत अधिक नुकसान होगा। क्योंकि, अगर अधिशेष वाले/ऋणदाता प्रमुख देश यूरोजोन से बाहर हो जाते हैं तो शेष यूरो का मूल्य वर्तमान अधिशेष वाले/ऋणदाता देशों की राष्ट्रीय मुद्राओं से बहुत कम होगा। वहीं, अगर परिधि के देश यूरोजोन से बाहर हो जाते हैं तो वे यूरो में मूल्यवर्गित अधिशेष वाले/ऋणदाता प्रमुख देशों को देय अपने कर्जों का भुगतान, यूरो की तुलना में उनकी राष्ट्रीय मुद्राओं के ढह जाने के कारण, नहीं कर पाएंगे ! दूसरे शब्दों में कहा जाए तो टिकाऊ वैश्वीकरण के अंतर्गत सिर्फ अल्पावधि में ही विजेता और पराजित वाली दोनों ही घटनाएं संभव हैं। परंतु टिकाऊ वैश्वीकरण की प्रकृति ही ऐसी है कि दीर्घावधि में सिर्फ विजेता ही बना जा सकता है, कोई भी हारने वाला नहीं होगा! इसलिए अंत में यही कहूंगा कि अगर हम मेहनत से कमाकर कमाई को साझा करते हैं तो हम सभी साथ-साथ समृद्धि प्राप्त करेंगे और अगर हम ऐसा नहीं करते हैं तो सभी एक-साथ आर्थिक संकट में घिर जाएंगे !!